'MMS' का बढ़ता दुरुपयोग जिम्मेदार कौन ?

(हम या यह आधुनिक तकनीक)

पल्लवी सक्सेना

http://mhare&anubhav.blogspot.com

घबराएँ नहीं मैं आपको "रागिनी" MMS के विषय में कुछ कहने या बताने नहीं जा रही हूँ। यह विषय वैसे तो अब बहुत पुराना हो चुका है और आज इस विषय से कोई अंजान नहीं किन्तु फिर भी यदि मैं एक छोटा सा परिचय दूँ, तो यह कहा जा सकता है कि, यह एक ऐसी तकनीक है जो आज कल लगभग सभी मोबाइल फोन में पाई जाती है। जिसके माध्यम से किसी का भी वीडियो बना कर संदेश की तरह किसी को भी भेजा जा सकता है। मोबाइल आजकल हमारी जिंदगी का वह अहम हिस्सा बन गया है कि आदमी एक बार खाने के बिना जिंदा रह सकता है मगर मोबाइल के बिना नहीं। क्यों भाई! पहले भी तो लोग बिना मोबाइल के हँसी खुशी जिया करते थे। फिर आज ऐसा क्या और क्यों हो गया है, कि जिसके पास जीवन यापन के लिए अच्छे साधन भले ही, ना हों, मगर मोबाइल जरूर होता है।

मुझे आज भी याद है जब हमारे घर में पहली बार लैण्डलाइन फोन लगा था। इतनी खुशी हुई थी हमको कि मैं उस खुशी को शायद यहाँ शब्दों में बयान ही नहीं कर सकती। मोबाइल का उपयोग तो मैंने अपनी शादी के बाद करना शुरू किया था, इसके पहले मोबाइल के बारे में जानकारी तो थी, मगर कभी इस्तेमाल नहीं किया था, ना मैंने और ना मेरे घर के किसी सदस्य ने। एक आज का जमाना है कि लोगों के पास नई तकनीक से भरपूर मोबाइल होने के बावजूद भी उनको हमेशा अब कौन सा नया मॉडल आया है जानने और लेने की उत्सुकता बनी रहती है।

खैर हम बात कर रहे थे MMS की, आज भी जब आप कोई समाचार पत्र उठा कर देखें, तो उसमें से दो चार समाचार तो आपको इस MMS से संबन्धित विषय पर जरूर मिलेंगे। जैसे फलाँ लड़की का MMS चलचित्र लेकर उसके और उसके परिवार वालों को पूरे समाज में बदनाम करने की धमकियाँ दी जा रही हैं, पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है, तफ्तीश जारी है वगैरह–वगैरह। इस विषय में सोचती हूँ तो बहुत दुविधा महसूस होती है, कि आखिर कहाँ कमी है। जिसके चलते यह विषय इतना आम हो गया है। इसका जिम्मेदार कौन है, हम या यह रोज नई तकनीक से भरपूर आने वाले मोबाइल फोन। "हम" यहाँ मेरा तात्पर्य हम के रूप में समाज से है। ऐसा मैंने इसलिए कहा क्योंकि कभी–कभी मुझे ऐसा महसूस होता है, कि इसके जिम्मेदार शायद कहीं न कहीं हम भी हो सकते हैं। शायद हम ही अपने बच्चों को ऐसे संस्कार देने में नाकामयाब हो रहे हैं जो हमको मिले थे कभी, जिसके चलते हमारी आज की पीढ़ी आधुनिक उपकरणों से इस कदर प्रभावित हो रही है कि सब कुछ भुला कर केवल अपना रुझान देखना ही उसे ठीक लगता है।

अगर हम बात करें नित नई आने वाली आधुनिक तकनीक से भरपूर मोबाइल कम्पनियों की तो शायद यह कहना गलत नहीं होगा इसमें वह कम्पनियाँ जिम्मेदार कम और दोषी हम ही लोग ज्यादा हैं। क्योंकि उनका तो काम ही है अपने व्यवसाय को सफलता के शिखर तक पहुँचाना फिर कोई देसी कम्पनी हो या विदेशी। यहाँ कुछ लोगों का मानना इस विषय में यह भी है कि विदेशी कम्पनियों ने हमारे यहाँ आकर हमारी कम्पनियों को दबा दिया। लेकिन इस मामले में भारतीय कम्पनियाँ भी पीछे नहीं हैं। कुछ एक कम्पनियों ने कुछ ऐसे उत्पाद को खुले आम बेशर्मी से बेचा के उसके सकारात्मक प्रभाव कम बल्कि नकारात्मक प्रभाव ज्यादा सामने आए। जिन्होंने जागरूकता फैलाने के नाम पर ऐसी कई चीजें है, जो खुले आम बेचा, ऐसी कई चीजें हैं जो जागरूकता के नाम पर बिकने लगी हैं। जिनका पहले परिवार के लोगों तक के सामने जिक्र करना बेशर्मी समझा जाता था आज जागरूकता फैलाने के नाम पर उन चीजों को खुले आम विज्ञापनों के माध्यम से बेचा जा रहा है और ऐसी सभी चीजें हर दवाइयों की दुकानों पर आसानी से उपलब्ध हैं। जिनका आसानी से गलत फायदा उठाया जा रहा है और जो लोग माँग करेंगे उन्हें वही चीज आसानी से उपलब्ध करवाना उनके व्यापार के सफलता का साधन बनता चला गया और आज भी बनता चला जा रहा है। जहाँ तक मुझे लगता है व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य होता है, पहले उपभोगकर्ता का रुझान अपनी और खींचना, फिर उसे उस वस्तु की आदत डलवाना और एक बार जब उपभोगकर्ता उस वस्तु की आदत का शिकार हो जाए तो बस फिर उसे वही चीज मन चाहे दामों में हर हालत में उपलब्ध करवाना और शायद यही वजह है, कि नई पीढ़ी नित नए आधुनिक तकनीक से भरपूर व्यसनों की तरफ आसानी से मोहित हो जाती है।

इसी आदत का गलत फायदा उठाते हैं कुछ लोग। मगर यहाँ सवाल यह उठता है कि आखिर इस हद तक लड़कियाँ जाती ही क्यों हैं कि कोई उनका MMS बनाकर उनको BLACK MAIL कर सके। कोई बता सकता है? यहाँ गलती किस की है। क्यों लड़कियाँ इस हद तक जाने लगी है, कि नौबत यहाँ तक आ रही है। शायद इसका एक ही कारण हो सकता है सही शिक्षा का अभाव, जिसे हम संस्कार कह सकते हैं। हाँ मैं इतना जरूर मानती हूँ कि कुछ मासूम लड़कियाँ जरूर इसका शिकार बन जाती हैं। वह भी इसलिए कि वहाँ जागरूकता की कमी है अर्थात जानकारी का अभाव है। जहाँ तक मेरी जानकारी है किसी भी विषय में जागरूक होने का मतलब होता है उस विषय की सम्पूर्ण जानकारी का होना और सही तरीके से उस जानकारी का उपयोग करना, ना कि जानकारी होते हुए भी उसका दुरुपयोग करना। इसी अभाव के चलते कुछ मासूम लड़कियाँ इस MMS का शिकार बन जाती हैं अर्थात उनका MMS बना लिया जाता है। उदाहरण के

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

तौर पर शॉपिंग माल जैसी जगह में अक्सर कपड़े बदलने वाले कमरों में लगे हुए आईने के माध्यम से या फिर छोटे–छोटे माइक्रो कैमरे के माध्यम से उनका MMS ले लिया जाता है। मगर सभी मालूम नहीं होते। लगता है, 'शायद प्यार के मायने बदल गए है' यह भी एक अहम कारण है इस समस्या का, जिसकी लड़कियाँ अक्सर शिकार होती हैं। कुछ अंजाने में और कुछ जान बूझकर भी।

जिस तरह हर बात के दो पहलू होते हैं–एक अच्छा, एक बुरा, ठीक उसी तरह इस बात के भी दो पहलू हैं। अच्छा यह कि यदि हम मोबाइल में उपलब्ध इस सुविधा का सही प्रयोग करें तो बहुत हद तक समाज का भला किया जा सकता है और दुरुपयोग का नतीजा तो आपके सामने आए दिन समाचार पत्रों के माध्यम से आप तक पहुँचता ही रहता है। तो अब सवाल यह उठता है कि आखिर इस समस्या का समाधान हो तो किस प्रकार हो। जहाँ तक मेरी सोच कहती है–इस समस्या को दो ही तरह से सुलझाया जा सकता है :–

पहला हम अपने बच्चों के दिलो दिमाग में यह बात बिठाने का प्रयत्न करें कि "किसी भी नई तकनीक को जानना या उससे प्रभावित होना कोई गलत बात नहीं है। मगर जरूरत है उससे होने वाले परिणामों की सम्पूर्ण जानकारी रखना" ताकि यदि कोई दूसरा व्यक्ति जब उस उपकरण का गलत उपयोग करे तब आप सावधान रह सकें और औरों को भी सावधान कर सकें।

दूसरा, जैसा कि मैंने पहले भी कहा था मोबाइल फोन आज के युग की जरूरत बन गया है तो यदि आपको अपने बच्चे को मोबाइल देना अति आवश्यक है, तो आप उसको ऐसा मोबाइल दें जिसमें सिर्फ बात करने और संदेश भेजने की ही सुविधा हो, इससे ज्यादा और कुछ ना हो अर्थात् कम से कम तकनीक का प्रयोग हो लेकिन आज की आधुनिक और चकाचौंध भरी दुनिया में यह बात अब संभव नहीं और यदि किसी तरह संभव हो भी गया तो आपके बच्चे उस मोबाइल को इस्तेमाल करने के लिए राजी होने से रहे। तो बेहतर यही होगा की आप पहला तरीका अपनाएँ और अपने बच्चों को भटकने से बचाएँ।

लघुकथा

बारिश का इन्तजार

मोनाली जौहरी
http://monali&feelingsfromheart.blogspot.com

एक दिन लड़की के बाप ने कहा, 'बच्चे जब पहले–पहल बोलना शुरू करते हैं तो माँ–बाप हर शब्द, हर बात पर कितना खुश होते हैं, कितना हँसते हैं, और फिर वही बच्चे जब बड़े हो कर बोलते हैं तो माँ–बाप के पास सिवाय आँसुओं और दुःख के कुछ नहीं रह जाता'

लडकी भी भोली–भाली, पुरानी हिन्दी फिल्मों की नायिका जैसी नहीं थी। तड़क कर जवाब दिया, 'जो बच्चे माँ–बाप को अपनी मासूमियत के चलते इतने हँसी, इतनी गर्व के पल मुफ्त दे जाते हैं, उनकी खुशी का वक़्त आने पर माँ–बाप तकाजा क्यों करने लगते हैं? अगर उनकी खुशियाँ भीख के तौर पर झोली में डाल भी दें तो उस झोली को तानों से इस कदर छलनी कर देते हैं कि सारी खुशियाँ छिन जाती हैं और सिवाय फटी खाली झोली के कुछ नहीं रहता।'

उस रोज के बाद से बाप–बेटी के बीच सन्नाटे का एक लम्बा रेगिस्तान पसरा हुआ है। दो–चार शब्दों के फूल जाने खिलते भी हैं या वे भी रेगिस्तान में भ्रम सी कोई मरीचिका हैं। हाँ, कड़ुवाहट के बवंडर अक्सर उठा करते हैं।

उस रोज के बाद से लड़की रेत की तरह जल रही है और बाप सूरज की तरह तप रहा है। दोनों बारिश की किसी फुहार के इन्तजार में हैं। क्योंकि दोनों अब थक गए हैं और दोनों को ही ठंडक की आस है, दोनों कुछ देर सुस्ताना चाहते हैं। इस गर्मी, इस जलन से राहत पाने के लिए बारिश से सीली हवा की नमी को अपनी साँसों में भर लेना चाहते हैं। दोनों बारिश की एक फुहार के इन्तजार में हैं।

अवश्य पढ़ें! दूसरों को पढ़ाएँ!!
जनसंघर्ष को समर्पित
लोक संघर्ष पत्रिका
सदस्यता शुल्क भेजने का पता–
रणधीर सिंह 'सुमन', प्रबन्ध सम्पादक, लोक संघर्ष पत्रिका,
निकट डी0वी0एस0 स्कूल, लखपेड़ावाग, बाराबंकी–225001 (उ0प्र0) भारत।
मो. :09450195427
e-mail : lokshangharsha@gmail.com Blog : lokshangharsha.blogspot.com

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional